वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष - २६ फरवरी - २०२६ प्रकाशन - ०२

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

फरवरी २०२६

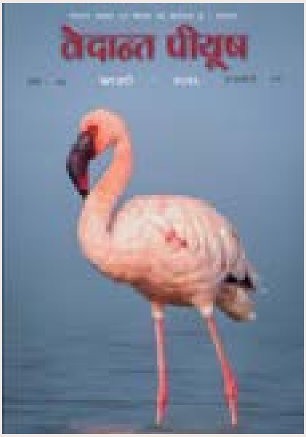

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

वेदान्त पीयूष

विषय सूचि

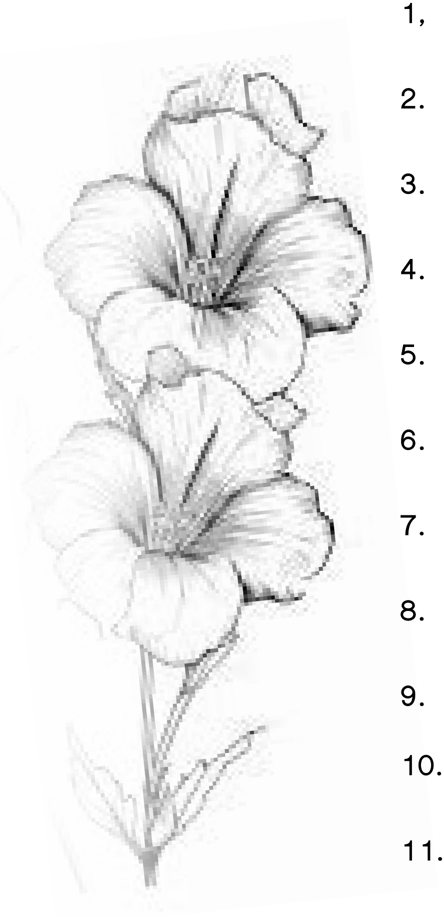

1,	प्रकाशक पृष्ठ	02
2.	श्लोक	05
3.	पू. गुरुजी का संदेश	06
4.	वाक्यवृत्ति	13
5.	गीता और मानवजीवन	18
6.	जीवन्मुक्त	23
7.	श्री कैकेयी चरित्र	26
8.	कथा-श्राप या वरदान!	29
9.	आश्रम-मिशन समाचार	32
10.	आगामी कार्यक्रम	56
11.	इण्टरनेट समाचार	59
12.	लिन्क	60

फरवरी 2026

आत्मबोध

श्लोक : ५५

यद् दृष्ट्वा नापरं दृश्यं
यद्भूत्वा न पुनर्भवः।
यज्ज्ञात्वा नापरं ज्ञेयं
तद्ब्रह्मेत्यवधारयेत्॥

जिसे देखने के उपरान्त और कुछ देखने योग्य नहीं रह जाता है, जो होने के उपरान्त अन्य कुछ बनना शेष नहीं रहता है तथा जिसे जानने के उपरान्त इस जगत् में न कुछ जानने योग्य शेष रहता है, उसे ही तुम ब्रह्म जानो।

सन्देश

पूज्य गुरुजी
स्वामी आत्मानन्दजी

विद्वत् और विविदिषा संन्यास

संन्यास – चतुर्थ आश्रम

संन्यास मानवजीवन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण शब्द व अवस्था है, जिसका उद्देश्य आत्मतत्त्व का सत्य जानना है। यह मानवजीवन का चौथा एवं अंतिम आश्रम हैै। संन्यास का अर्थ है – ऐसा मुक्त और नियंत्रित मन, जो किसी भी वस्तु के सत्य को, विशेषतः अपने स्वयं के सत्य को, प्रत्यक्ष रूप से जानने में सक्षम हो।

हमारे संस्कार वे धारणाएं हैं, जो हमने देखा, पढ़ा और मान लिया। ये धारणाएं हमारे निजी राग–द्वेष से और अधिक दृढ़ हो जाती है और इन्हींसे हमारा तथाकथित ‘व्यक्तित्व’ का निर्माण होता है। वास्तव में हम एक काल्पनिक धारणाओं और विश्वासों के संसार में जीते है। यही संस्कार हमें अपने स्वयं के सत्य और जीवन के यथार्थ से अनभिज्ञ रखते हैं।

विद्वत् और विविदिषा संन्यास

संन्यास का अर्थ है इन धारणाओं और कल्पनाओं से मुक्त होना। आत्मसत्य के प्रयक्ष ज्ञान के लिए यह एक अनिवार्य पूर्व शर्त है।

संन्यास – विवेक का स्वाभाविक परिणाम

संन्यास कोई प्रयासजन्य कर्म नहीं है; यह सहज है, क्योंकि यह किसी वस्तु या विश्वास की असत्यता के प्रत्यक्ष बोध से उत्पन्न होता है।

यदि हमें स्पष्टरूप से यह ज्ञात हो जाए कि डाइनिंग टेबल पर रखे फल केवल सजावटी, नकली है, तो चाहे कितनी भी भुख क्यों न हो, हम उसे खाने के लिए हाथ नहीं बढ़ाएंगे। ज्ञान अत्यन्त शक्तिशाली है, वह किसी भी असत्य से स्वतः विरक्ति उत्पन्न कर देता है, भले ही संसार भर के लोग उसे सत्य मानते हो। एक संन्यासी को शायद तुरंत सत्य का ज्ञान न हो, परन्तु असत्य को असत्य रूप में अवश्य जान लेता है – और यही अपने आपमें महान स्वतंत्रता है।

केवल वही लोग आगे चलकर सत्य को सत्यरूप में जान सकते हैं। जो व्यक्ति मिथ्याज्ञान से आच्छादित व कलुषित है, वह कभी सत्य को देख ही नहीं सकता।

विद्वत् और विविदिषा संन्यास

मिथ्या का निषेध

रस्सी–सांप के प्रसिद्ध उदाहरण में, यदि कोई व्यक्ति कल्पित सांप को वास्तविक मान रहा हो, तो काई भी इन्द्रिय–प्रमाण उसे सत्य तक नहीं पहुंचा सकता पहले उस कल्पित सांप को निराधार कल्पना के रूप में पहचानना और उसका निषेध करना आवश्यक है; तभी अधिष्ठान रूप रस्सी का सत्य प्रकट होता है।

यही मार्ग है। मिथ्या धारणा से मुक्ति ही संन्यास का वास्तविक सार है। ज्ञान से उत्पन्न वैराग्य – बिना किसी दबाव, बिना किसी विश्वास–आडम्बर के, केवल तथ्यात्मक दृष्टि से होता है – यही संन्यास का तत्त्व है। वेदान्त की परम्परा में इसे विद्वत् संन्यास कहा गया है।

विद्वत् संन्यास

ऐसा विद्वत् संन्यासी जनसामान्य की मान्यताओं से भिन्न ज्ञान के मार्ग पर चलने में सक्षम होता है – कभी कभी पूर्णतः एकान्त में भी। क्योंकि उसेसब की असत्यता, अनित्या, असारता का प्रत्यक्ष बोध हुआ होता है। यही संन्यास का सही मार्ग है। ऐसे विवेकी संन्यासी पूर्ण श्रद्ध

विद्वत् और विविदिषा संन्यास

ा और निष्ठा के साथ आत्मज्ञान के उपदेशों का अनुकरण करते हैं। उनका एकमात्र लक्ष्य होता है – आत्मा को आत्मा के रूप में प्रत्यक्ष जानना। परन्तु ऐसे लोग अत्यन्त दुर्लभ हैं, क्योंकि संसार के सत्य को ही यथार्थ रूप में जान लेने के लिए भी गहन बुद्धि तथा महापुरुषों का संग आवश्यक होता है।

विवेक के लिए सत्संग की आवश्यकता

प्रारम्भ में पत्येक व्यक्ति अज्ञानी ही होता है, और हमारे आसपास अधिकांश लोग संसार की परम्पराओं के अंधानुयायी होते हैं। फलस्वरूप हम भी उन्हीं मान्यताओं से दूषित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में इतना गहन सत्संग प्राप्त होना, जिससे हमारी दृष्टि मूलतः ही परिवर्तित हो जाएं – यह अत्यनत दुर्लभ है।

हम ऐसे गुरु और ऐसे शिष्य दोनों को नमन करते हैं। यह एक दुर्लभ संयोग है। न तो ऐसे महापूरुष सहज उपलब्ध होते हैं, और न ही ऐसे पात्र शिष्य।

अब प्रश्पन यह उठता है कि एक साधारण व्यक्ति को यह विवेक कैसे प्राप्त हो – हम से कम इतना जतो कि अनित्य को अनित्य के रूप में जान सकें।

विद्वत् और विविदिषा संन्यास

कर्मयोग से चित्तशुद्धि

आदर्श मार्ग यह है कि हम सात्विक मन के लिए कर्म करें। हमारा प्रत्येक कर्म ईश्वर-पूजा बन जाएं। जो भी उत्तरदायित्व और चुनौतियां हमारे जीवन में आएं, उन्हें स्वीकार करें और विवेकपूर्वक समाधान खोजें।

यही भगवद्ग्रीता और पुराणों सहित समस्त वेदान्त ग्रंथों का उपदेश है। इसे कर्मयोग कहते हैं - जहां प्रत्येक कर्म चित्तशुद्धि और संस्कारक्षय का साधन बन जाता है।

विविदिषा संन्यास

एक और मार्ग भी है - जिसे विविदिषा संन्यास कहा जाता है। इस प्रकार के संन्यास में साधक को न तो आत्मा का यथार्थ ज्ञान होता है औश्र नह न ही अनात्मा का। फिर भी उनकी गहन जिज्ञासा और प्रामाणिकता को देखकर, उन्हें किसी आचार्य के चरणों में वेदान्त-अध्ययन का अवसर दिया जाता है- आश्रम जैसे संरक्षित वातावरण में।

उन्हें ब्रह्मचारी आदि की दीक्षा दी जा

विद्वत् और विविदिषा संन्यास

सकती है। वे पूर्णकालिक रूप से शास्त्रों का अध्ययन कारते हैं तथा आश्रम और गुरु की सेवा करते हैं। योग, जप, मंत्रोच्चार, पूजा आदि साधनाएं भी करते हैं

यह एक प्रकार का अस्थायी और प्रत्यावर्तनीय संन्यास होता है। परन्तु उसमें अध्ययन और साधना के लिए अत्यन्त अनुकूल वातावरण मिलता है।

जब ये विविदिषा संन्यासी अनात्मा की असत्यता और आत्मा के सत्य िके प्रत्यक्षरूप से जान लेते हैं, तब उनका संन्यास और भी गहन हो जाता है और वह विद्वत् संन्यास में परिणत हो जाता है।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

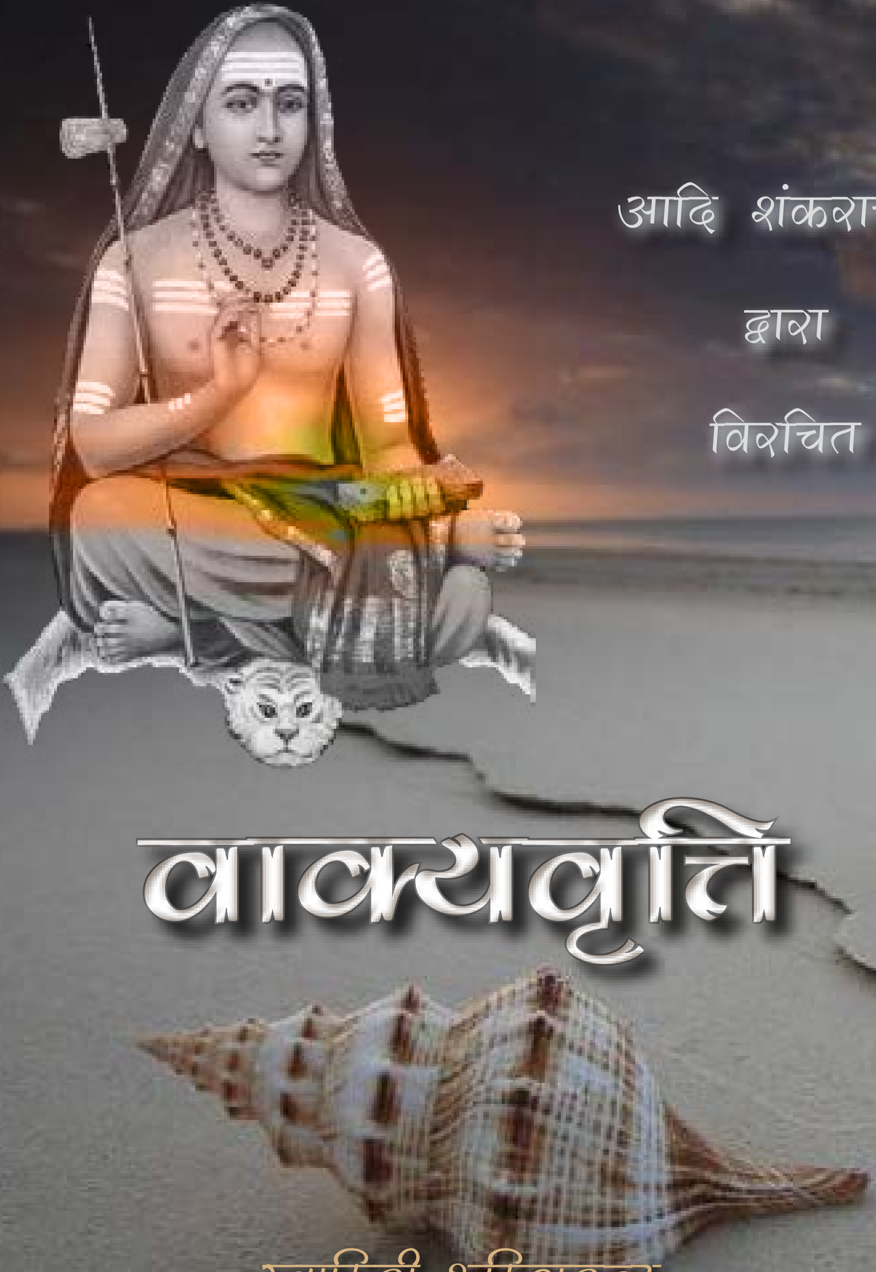

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्व परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्‌मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

श्लोक – ३१

सर्वज्ञत्वं परेशत्वं
तथा सम्पूर्णशक्तिता॥
वेदैः समर्थ्यते यस्य
तद्ब्रह्मेत्यवधारय।

जिसे शास्त्रों ने सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, सर्व शक्तिमानरूप बताया है – वह ही ब्रह्म है, ऐसा निश्चय करो।

वाक्य वृत्ति

आचार्य यहां से आगे पांच श्लोकों तक ब्रह्म का वाच्यार्थ प्रतिपादित कर रहे हैं। ब्रह्म या ईश्वर अपौरुषेय विषय है और अपौरुषत्वे वेदः एव प्रमाणः। जो भी हमारी बुद्धि की समझ से परे है, उसमें वेद ही प्रमाण है। अतः आचार्य यहां ब्रह्म का वाच्यार्थ बताते हुए कहते हैं कि, वेदैः समर्थ्यते यस्य अर्थात् वेदों में जिसका इस प्रकार से प्रतिपादिन किया गया है तद्ब्रह्मेति अवधारय – वह ब्रह्म है, इस प्रकार निश्चय करो।

यहां वेदों का प्रमाण देते हुए मुण्डक उपनिषद् की श्रुति का उद्ध रण दे रहे हैं। जहां अंगिरा ऋषि को शौनकजी आकर पूछते हैं कि किसको जानने पर सब का ज्ञान हो जाता है। उसके उत्तर में अंगिराजी बताते हैं कि यः सर्वज्ञः...। जो सर्वज्ञ, सर्ववित् है. .. इत्यादि। जैसे घटकर्ता घटज्ञः उसी प्रकार से सर्वकर्ता सर्वज्ञः। जो इस सृष्टि के बनानेवाले होने से सबको जानते हैं। जहां जीव

अल्पज्ञ है, जिसमें ज्ञान की कमी है। वह न अपने बारे में जानता है, न जगत् के बारे में ज्ञान रखता है और न ही ईश्वर के बारे मे। तद्विपरीत ब्रह्म सर्वज्ञ है। उन्हींसे समस्त सृष्टि की उत्पत्ति हुई है, अतः वह सब का ज्ञान रखते हैं।

सब उसीमें से उत्पन्न होने से उनमें परेशत्व भी है। जीव परवश है, वह काल, कर्म तथा जगत के द्वारा नियंत्रित है। उनमें कर्म करने की स्वतंत्रता तो है, किन्तु कर्म का सामर्थ्य, कर्म के साधन, कर्मक्षेत्र के उपर नियंत्रण नहीं है। अतः कर्म की स्वतंत्रता होते हुए भी कर्मफल को पाने में स्वतंत्रता नहीं है। जीव के उपर शासन करनेवाला ईश्वर है, किन्तु जिसे ब्रह्म कहा, वे परेश अर्थात् सर्वेश्वर हैं। पूरे जगत को उत्पन्न

करनेवाले, उसका पालन करनेवाले तथा उसका विनाशक है। समस्त ब्रह्माण्ड उनके ही वश में है। तैत्तिरीय उपनिषद् में उनका शासकत्व बताते हैं कि 'भीषास्माद्वातः पवते...' अर्थात् ऐसा लगता हैं कि वायु उनके भय से बह रही है, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, इन्द्र उन्हींके शासन में कार्य कर रहे हैं। यहां तक मृत्युदेवता भी उन्हींके इशारों पर मानो सतत अपना कार्य कर रहे हैं। अर्थात् समस्त प्रकृति, उनके तत्त्व उन्हींके वश में रहकर अपने अपने धर्म का पालन कर रहे हैं। किन्तु सब के शासक ब्रह्म किसीके वश में नहीं है। इस प्रकार उनका शासकत्व अर्थात् सर्वेश्वरत्व दर्शाया गया है। आचार्य बताते हैं कि जिसको श्रुति ने सर्वज्ञ, सर्वेश्वर के रूप में प्रतिपादन किया है उसे तुम ब्रह्म जानों।

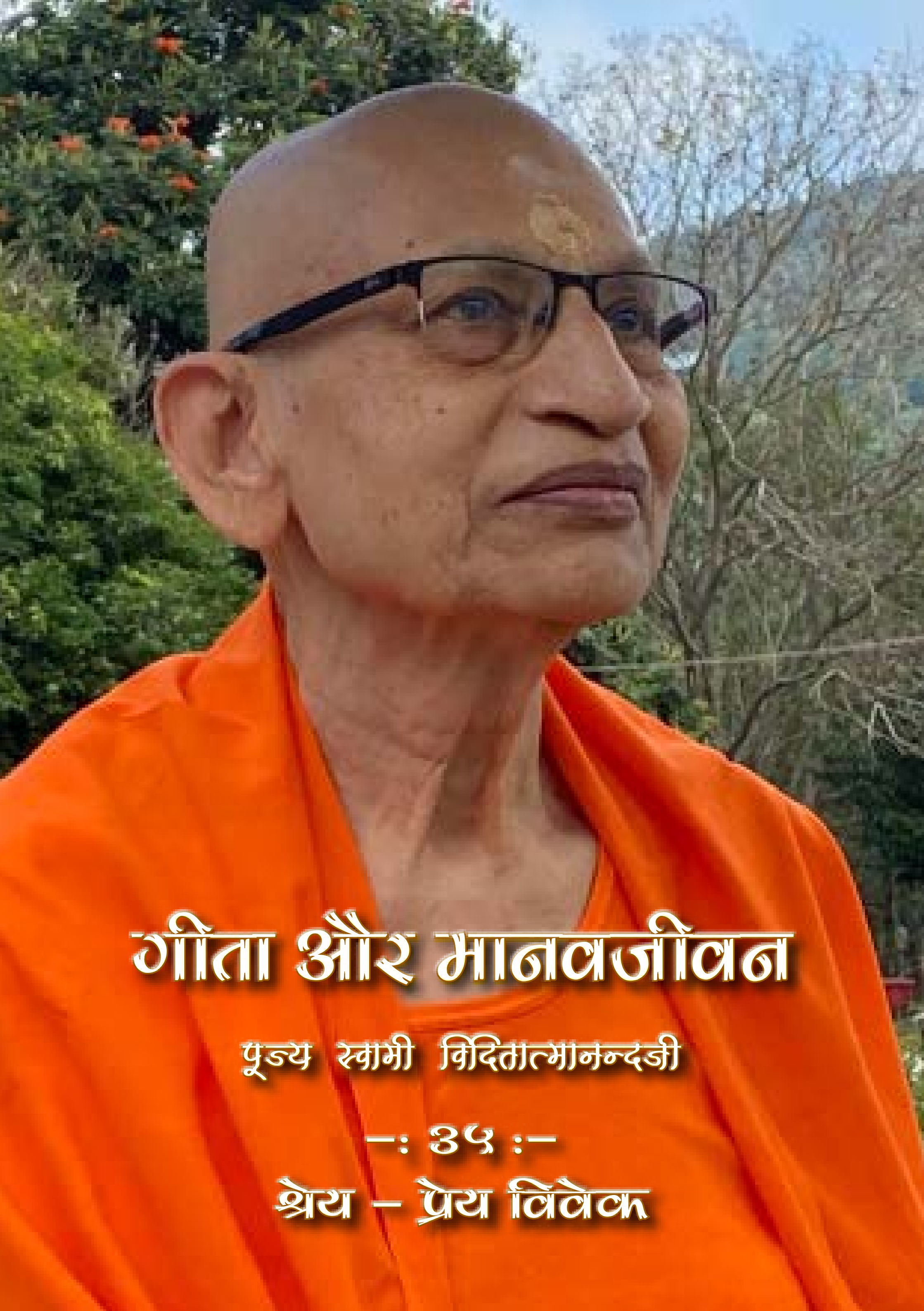

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

-: ३५ :-

श्रेय - प्रेय विवेक

गीता और मानवजीवन

प्रत्येक के जीवन में उत्कृष्ट लक्ष्य होना चाहिए, उत्कृष्ट मूल्यों के लिए भी मूल्य/महत्व होना चाहिए। यदि परिस्थितिवशात् मूल्यों का पालन न हो तो उसमें इतनी हानि नहीं है। किन्तु मन में सजगता अवश्य होनी चाहिए कि 'आज इस मूल्य का पालन मैं नहीं कर पाया हूं, क्योंकि अभी मुझमें उतना सामर्थ्य प्राप्त नहीं है। सत्य बोलता हूं, तो नौकरी छूट जाएगी। नौकरी को छोडने जितनी, रास्ते पर भटकने की मुझमें शक्ति नहीं है।' किन्तु यह भी याद रखना चाहिए कि आज अमुक मूल्यों के साथ समझोता करना पडा। जब भी ऐसा हो तो शुद्ध हृदय से प्रभु से कहें कि, 'हे प्रभु! एक दिन ऐसा भी देना कि जब मुझे इस तरह मूल्यों के साथ समझौता न करना पडे। मुझे इतना बल प्रदान करना कि इस मूल्यों के

पालन के लिए मैं बलिदान दे सकूं, त्याग कर सकूं।' इस प्रकार, अपना आश्या शुद्ध होना ही चाहिए। लक्ष्य जितना उत्कृष्ट होगा, उतनी ही उससे प्रेरणा अधिक, आन्तरिक बल प्राप्ति की सम्भावना अधिक होगी।

हमें आन्तरिक बल अवश्य ही प्रापत करना पडेगा, अन्यथा इस युग में टिक नहीं पाएंगे। और साथ ही अपनी योग्यता से अधिक पाने की तृष्णा को भी त्यागना पडेगा।

श्री शंकराचार्यजी बताते हैं कि, हे मूढ मनुष्य! धन की तृष्णा का त्याग कर, तुम्हारे मन को तृष्णारहित बनाओ और फिर ईश्वर का चिन्तन कर। यदि धन का त्याग नहीं भी करता है तो भी अधिक से अधिक धन पाने की तृष्णा का अवश्य त्याग कर। मन में जब तक तृष्णा है, तब तक लोभ, लालच के वशीभूत होगा। जहां तृष्णा है, वहां लोभ है, वहां चोरी भी होगी ही, अनैतिकता रहेगी ही। यदि कोई गरीब व्यक्ति है, जिसे खाने-पीने की व्यवस्था के लिए भी समस्या है, वह यदि चोरी करे तो समझ सकते है। किन्तु आज उनके पास बहुत कुछ होते हुए, किसी बात की मना न हो तो भी चोरी करते है,

ऐसा लगता है। उनकी चोरी करने का तरीका कुछ परिष्कृत हो सकता है। गरीब आदमी चोरी करने के बदले पुलिस की मार खाता है, जब कि वह धनी व्यक्ति चोरी करने पर भी समाज में पूजित होता है। कभी तो ऐसा लगता है कि जिनके पास अधिक है, वो अधिक चोरी करता है। किसलिए? तृष्णा, लोभ, असंतोष - इन हीन मूल्यों के सेवन से मनुष्य बेइमान बनता है। हीन मूल्य ही इन्सान को हीन, बेईमान बनाता है।

इसलिए आचार्य बताते हैं कि, 'अपने इमानदारी किए प्रयास से जो कुछ प्राप्त हो उससे प्रसन्न रहा।'

इतनी लोलुपता किसलिए, यदि तुम भूखे मरते हो, रस्ते पर भटकते हो तो बात अलग है। किन्तु भगवान की कृपा से तुम्हें दो बार भोजन मिलता है, रहने को घर है, तुम्हारा सब व्यवहार चल रहा है तो फिर हीन मूल्यों का सेचन किसलिए? इसलिए विचार की आवश्यकता है कि जीवन में तुम्हें क्या चाहिए है? जीवन किसलिए मिला है? श्रेय और प्रेय के विकल्प सतत प्राप्त होता है। श्रेय अर्थात् जिससे कल्याण होता है और प्रेय अर्थात् जो प्रिय लगता है। जगत के विषय इन्द्रियों

गीता और मानवजीवन

में आवेश उत्पन्न करते है, उसमें सुख का आभास होता है और इसलिए मनुष्य उसके प्रति आकर्षित होता है। किन्तु स्थूल विषयों का स्थूल उपभोग के लिए मनुष्य की उपाधि नहीं मिली है। यह उपाधि किसी उत्कृष्ट लक्ष्य की सिद्धि के लिए दिया हुआ उपहार है। यह जीवन-रथ श्रेय मार्ग पर प्रेरित होना चाहिए, प्रेय पथ पर नहीं। ऐसा विवेक जीवन में होना चाहिए। अर्थात् इस प्रकार का विवेक होगा तो छोटे-छोटे प्रलोभन से प्रलोभित नहीं होंगे और फिर उन मूल्यों के साथ समझोता करने की या उसे त्यागने की आवश्यकता भी नहीं होगी।

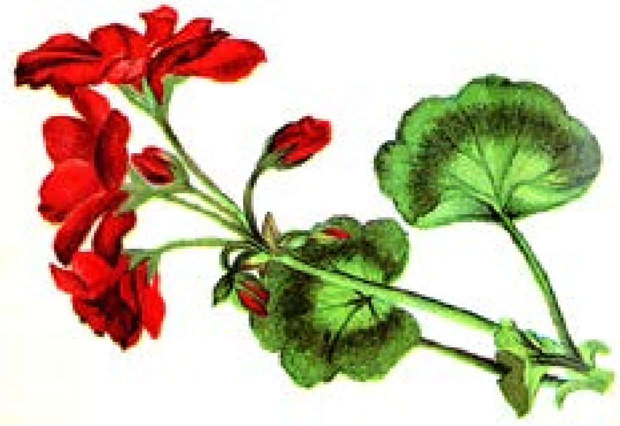

जीवन्मुक्त

– ९७ –

बदरीनाथ

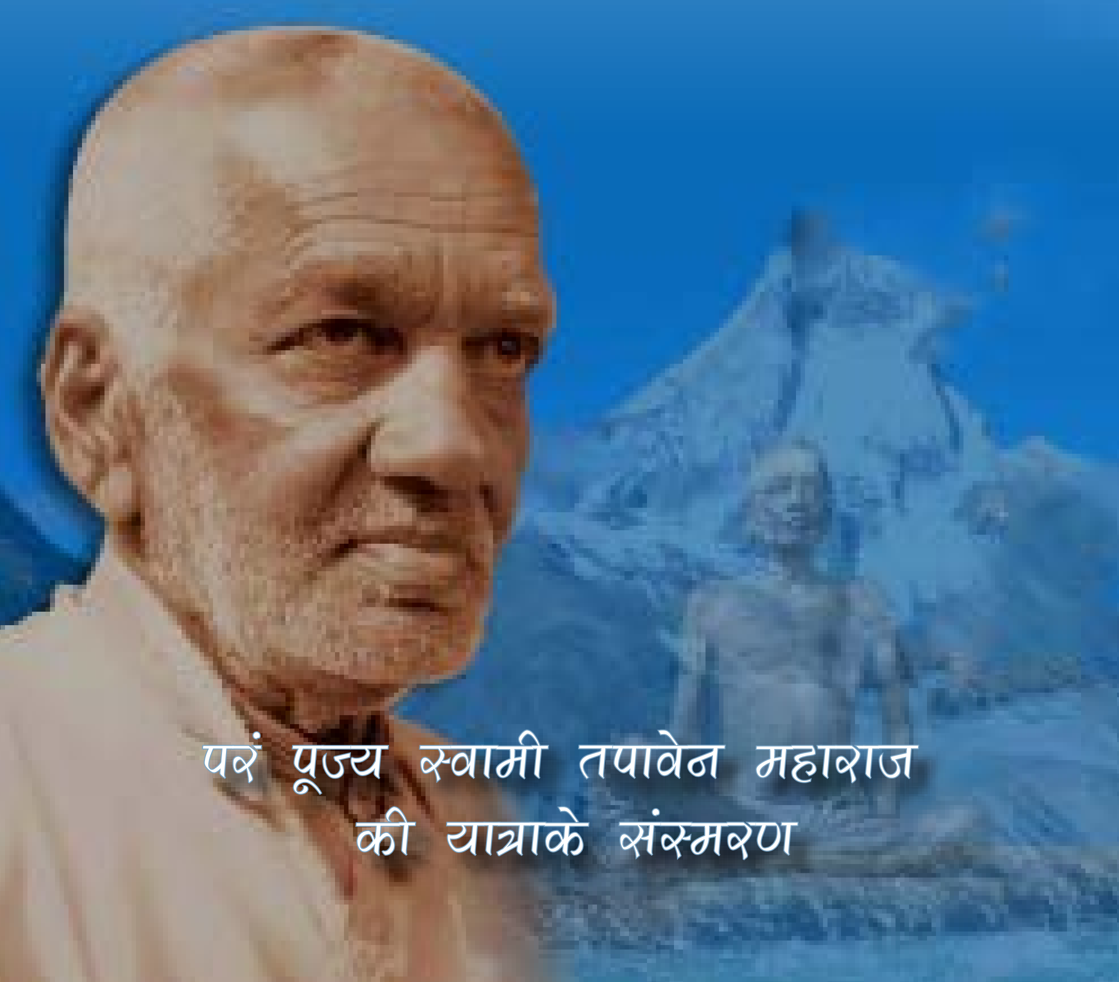

परं पूज्य स्वामी तपोवन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

बदरीनाथ की मूर्ति की पूजा करनेवाले पुजारी केरल के नम्पूतिरि जी है, जो कि यहां छः मास से आये हुए है।

यहां से सत्रह हजार फुट उपर 'नीतिपास' को पार कर एक मार्ग तिब्बत की ओर जाता है। 'नीतिपास' के निकट ही द्रोणगिरि नामक हिमालय की उंची चोटी स्थित है। यही वह रामायण प्रसिद्ध स्थान है जिसे मृत संजीवनी आदि दिव्य-औषधियों का कोष कहा गया है। ज्योतिर्मठ से अठारह मील दूर उत्तर की ओर बदरीपुरी है। यहां की गंभीर शिला शैल हृदयहारी हैं। पर्वतों को भेदती हुई, गंभीर शब्द के साथ नीचे की ओर गिरती हुई अलकनन्दा का दृश्य भी अति मनोहारी है। यह तो भूतत्व वेत्ताओं के लिए ज्ञातव्य है कि अलकनन्दा को इन अत्युन्नत, निबिड़, तथा दूर तक

फैले हुए पाषाण खण्डों के बीच में से नीचे उतर आने का छिद्र कैसे मिल गया है? हिमालय में इसी प्रकार के अनेक दृश्य दिखायी दे जाते है जहा अविदार्य शिलोच्चयों के बीच छोटे छोटे छिद्रों में से होकर नदियां लुकछिप कर नीचे की ओर उतर आती है।

इस तरह हृषीकेश से हिमाद्रि शिखरों पर विराजमान गंगोत्री, केदार और बदरी धामों की ओर सैर करनेवाले एक यात्री को तीर्थाटन के बहाने अत्यन्त रमणीय तथा पवित्र भूभागों का दर्शन मिल जाता है। पुराणों में केदारखंड के नाम से प्रकीर्तित हिमगिरि के ये प्रदेश अति मनोहारी हैं, निरुपद्रव हैं। इसी खंड में सुशोभित गंगा और अलकनन्दा की शान्ति महिमा संसार में अद्वितीय है। पौराणिकों ने इसी भूखण्ड की भूरि भूरि प्रशंसा की हैः

गंगाद्वारोत्तरं विप्र! स्वर्गभूमिः स्मृता बुधैः।
अन्यत्र पृथिवी प्रोक्ता गंगाद्वारोत्तरं विना।।

'हरिद्वार के उत्तर प्रदेशों को विद्वानों ने स्वर्गभूमि कहा है। इन देशों को छोडकर दूसरे प्रदेशो को उन्होंने पृथ्वी की संज्ञा दी है।'

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री कैकेयी चरित्र

– ०५ –

प्रनवउं परिजन सहित विदेहू।
जाहि राम पद गूढ सनेहू।।

श्री कैकेयी चरित्र

महल में प्रविष्ट होते ही उन्हें अकल्पनीय समाचार प्राप्त होता है, 'महारानी कोप–भवन में बैठी हुई हैं।' एक बार वे इस समाचार को सुनकर चौंक उठे थे। किन्तु वे उनके इस प्रत्याशित रूप की कल्पना जाग्रत तो क्या स्वप्न में भी नहीं कर सकते थे। नहीं तो सम्भव है वे कैकेयी के भवन के बहिरंग भाग से ही लौट आते। उन्होंने इसे भी स्नेह–जलधि में उठती हुई एक तरंग के रूप में देखा। स्नेह में मान–मनुहार उसी एकरसाता को मिटाकर नूतनता का संचार करता है। अतः महाराज ने इसे भी कामकला के एक रूप में देखा हो तो उसे अस्वाभाविक नहीं कहा जा सेता। फिर आगे बढ़ते हुए कैकेयी को मनाने के लिए किन शब्दों का प्रयोग करना होगा इस चिन्तन में लग गए हों तो कोई आश्चर्य नहीं। इस समय उनकी मनःस्थिति एक चक्रवर्ती सम्राट के समान न होकर एक वृद्ध रसिक राजा की भांति हो रही थी। ऐसी

श्री कैकेयी चरित्र

मनःस्थिति में वे कैकेयी के सन्निकट पहुंचकर चाटुकारिता भरे स्वर में उन्हें प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं। किन्तु आज कैकेयी को मनाना सरल न था। 'कोटि कुटिलमणि' मन्थरा के द्वारा रटाया गया पाठ उन्होंने पूरी तरह आत्मसात् कर लिया था। मन्थरा ने प्रारम्भ में ही कैकेयी को एक महान् मंत्र दे दिया था जिसमें स्पष्ट चेतावनी थी कि जब तक महाराज श्री राम की शपथ न लें तब तक उनसे कोई याचना ना कीजिएगा।

भूपति राम सपथ जब करई।
तब मागेहु जेहिं बचनु न टरई।।

महाराज दशरथ सत्य के लिए बड़े से बड़ा बलिदान कर कसते हैं, यह जानते हुए भी मन्थरा को यह सुदृढ़ विश्वास था कि यदि राम और सत्य दोनों में तुलना का प्रश्न आए तो पलड़ा रामप्रे के पक्ष में ही अधिक झुक जाएगा। राम-शपथ के माध्यम से वह इस समस्या का समाधान ढूंढ़ लेती है। मन्थरा के द्वारा सोची गई योजना तब पूर्ण साकार रूप ग्रहण कर लेती है जब महाराज कैकेयी को प्रसन्न करने की चेष्टा में राम की शपथ ले लेते हैं। बस यही कैकेयी को अभीष्ट भी था। तब कैकेयी अपनी अभिनय कुशलता का परिचय देते हुए महाराज श्री के समक्ष मनभरी भाषा में अपनी मांग की भूमिका प्रस्तुत करती है। जिसके लिए गोस्वामीजी 'किरातिनि फंद' की उपमा देते हैं।

कथा / प्रसंग

श्राप या वरदान!

श्राप या वरदान!

दुर्योधन आदि अधर्मियों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए अर्जुन अपने १३ वर्षो के वनवास के दौरान अस्त्र-शस्त्र अर्जित करने, युद्धकला में और भी निपुण होने के लिए सतत अभ्यास करता था। इसी दौरान वह इन्द्रदेवता से भी शस्त्रविद्या सीखने व नए अस्त्र-शस्त्र अर्जित करने के लिए इन्द्रलोक भी पहुंचा। वहां रहकर अस्त्र-शस्त्र का खूब अभ्यास भी किया और नए शस्त्र भी अर्जित किएं। शस्त्रविद्या प्राप्ति उपरान्त उन्होंने इन्द्रदेवता से अपने लोक लौटने के लिए अनुमति ले ली। किन्तु जब वह लौटने के लिए तैयार हुआ तब स्वर्ग की अप्सरा उर्पशी ने उनसे प्रणय का प्रस्ताव रखा, पर अर्जुन ने उन्हें मातृवत् मानकर अस्वीकार कर दिया।

इससे क्रोधित होकर उर्वशी ने अर्जुन को श्राप दिया कि वह नपुंसक हो जाएं। जब इन्द्रदेव को यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने समझ लिया कि इसमें अर्जुन ने कोई अधर्म नहीं किया है, किन्तु उनका धर्मोचित कार्य है। अतः उर्वशी से इस श्राप को विफल करने को कहा। उर्वशी को

श्राप या वरदान!

भी अपनी इस भूल पर पश्चात्ताप हुआ, किन्तु वह उसे विफल करने में असमर्थ थी। अतः उसे संशोधित करते हुए श्राप की अवधि केवल एक वर्ष की कर दी।

जब पाण्डवों को अज्ञातवास में रहना था, तब अर्जुन बृहन्नला बन गएं और राज विराट की पुत्री राजकुमारी उत्तरा को नृत्य और संगीत सीखाया। अर्जुन ऐसा प्रतिभाशाली, वीर, धर्मपरायण योद्धा था कि वो किसी भी प्रकार से छिप नहीं सकता था। किन्तु वह स्त्री के रूप में रहने के कारण ही सुरक्षित रहें, मानो यह उनके लिए रक्षाकवच बन गया। वह श्राप उसके लिए आशीर्वाद बन गया।

ईश्वर भी जीवन में विभिन्न परिस्थितियां, अनेकों उतार-चढ़ाव देते हैं। किन्तु जब प्रतिकुलता प्राप्त होती है, तब उस समय तो यह अभिशाप प्रतीत होती है। किन्तु वस्तुतः भगवान की करुणानिधानता, निष्ठुर दया की ही अभिव्यक्ति होती है। उसमें एक जीव का पुरुषार्थ यह होता है कि ईश्वर प्रदत्त प्रत्येक परिस्थिति को उनका कृपाप्रसाद जानते हुए उसे आशीर्वाद में बदल दें। यही जीवन में सकारात्मकता है।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

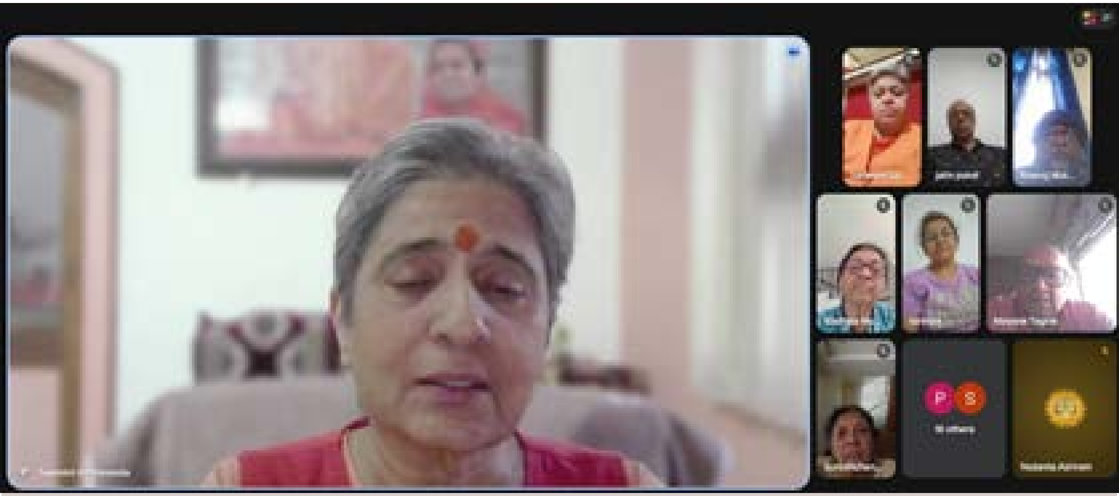

Weekly Online Classes
Upadesh Saar
& Geeta Ch 7

आश्रम / मिशन समाचार

Gita Gyan Yagya, Ahmedabad

आश्रम / मिशन समाचार

Gita Gyan Yagya, Ahmedabad

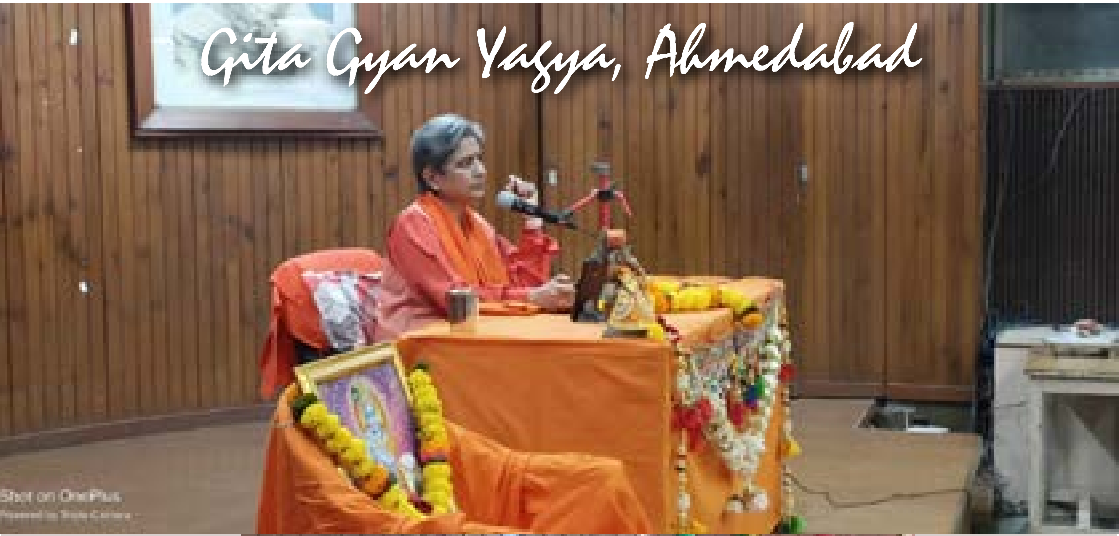

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

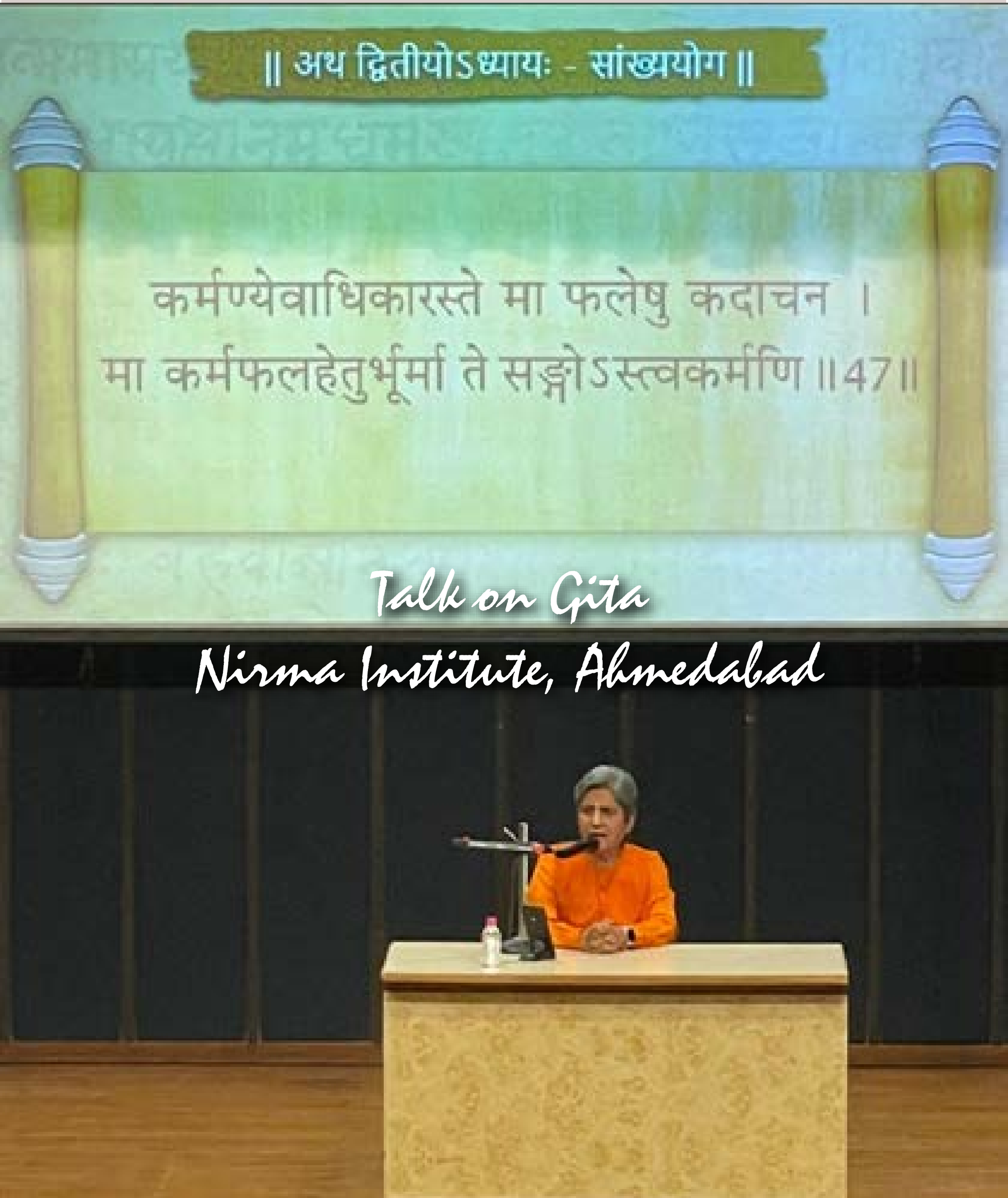

Talk on Gita
Nirma Institute, Ahmedabad

आश्रम / मिशन समाचार

by Poojya Swamini Amitananda ji

Organized by
Faculty of Electronics

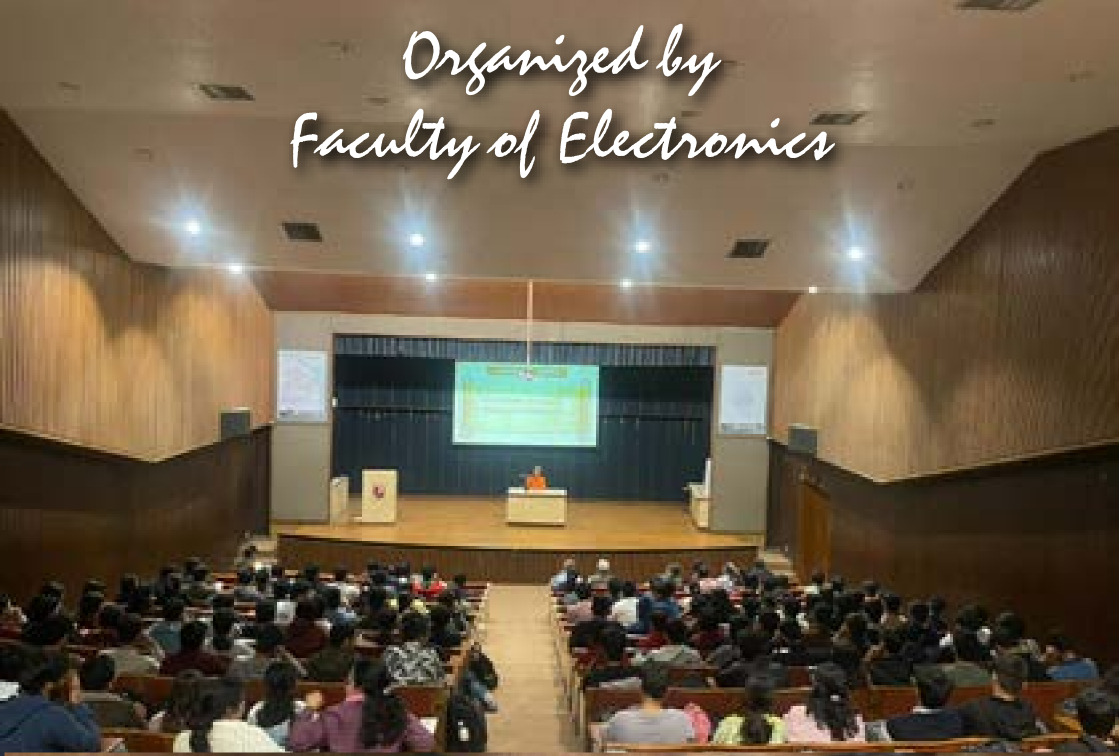

NIRALA

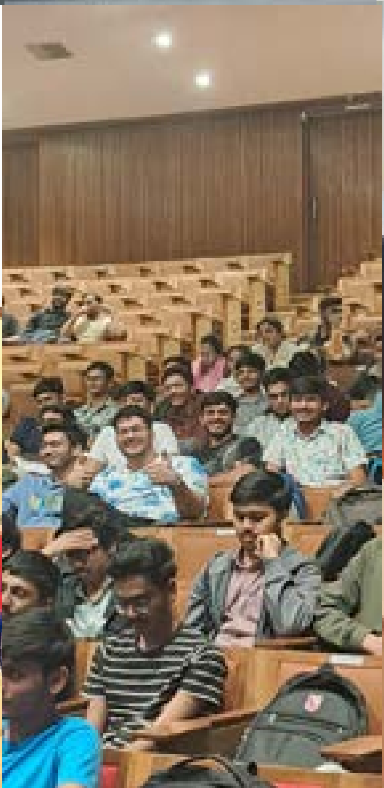

Attentive Students

Shiv Puja

By Sh Vinod Puri
1st Jan 2026

Shiv Puja

By Sh Bharat Raikwar
1st Somvar of New Year

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Om Sri Gurubhyo Namah

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

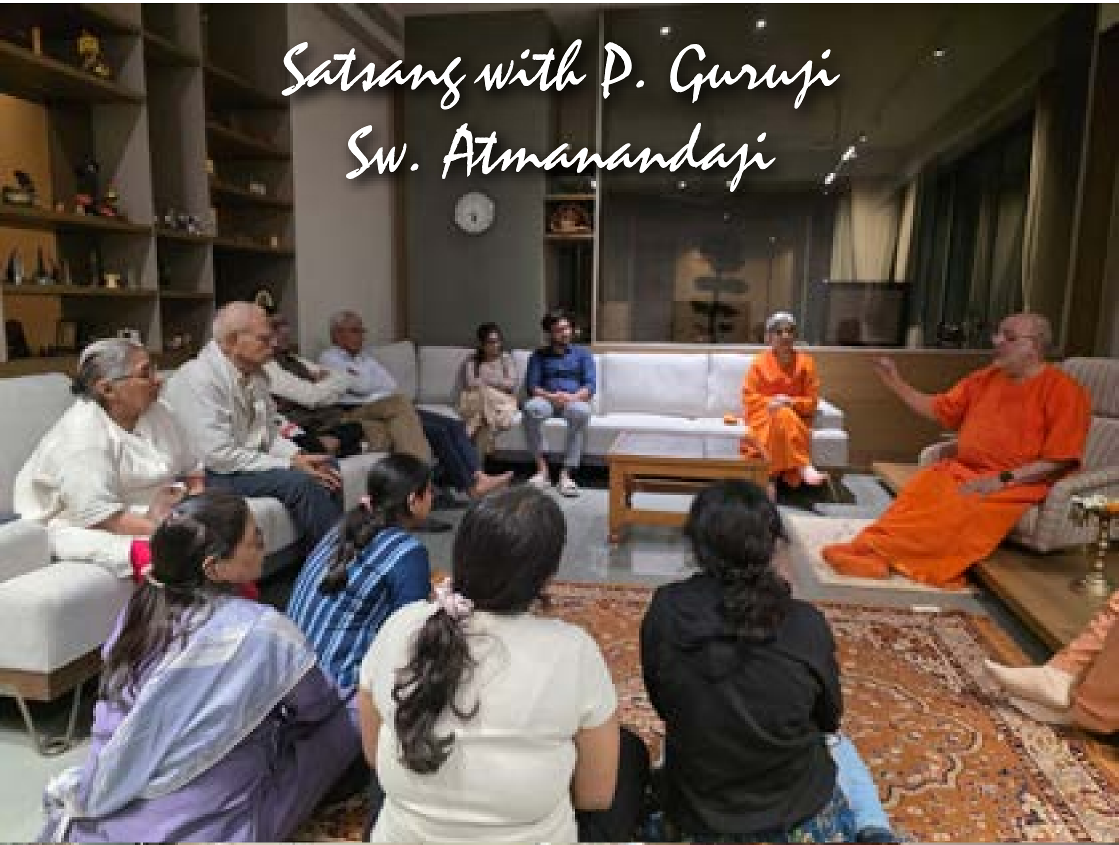

at 'Poornam' Bunglow

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Sh Avinash Datta ji

left for his heavenly abode

on 6th Jan 2026

We all offer

our heartfelt Prayers & Condolences

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता

(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

ऑनलाइन वेदान्त कक्षा

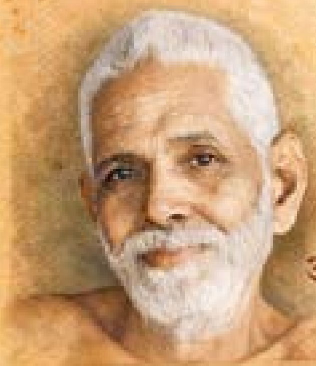

श्री रमण महर्षि विरचित

उपदेश सारम्

(UPADESH SAARAM)

आत्मज्ञान का सरल एवं सारगर्भित ग्रन्थ

वक्ता: स्वामिनी अमितानन्दाजी

Google Meet (ऑनलाइन)

प्रत्येक शनिवार

सायं 4:00 बजे से

हिन्दी

17 जनवरी 2026 से आरम्भ;
प्रति शनिवार सायं 4 बजे से

सभी जिज्ञासु साधकों का स्वागत है

ॐ “स्वस्वरूप की ओर एक यात्रा” ॐ

www.vmission.org.in / vashram.in@gamil.com

आश्रम / मिशन समाचार

ओनलाईन सत्संग

प्रति शनिवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

भगवान रमण महर्षि विरचित उपदेश सारम्

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

ओनलाईन सत्संग

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

श्लोकपाठ / ध्यान / सत्संग

पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी

एकादशी सत्संग

प्रति एकादशी को

on YouTube Channel

पूज्य स्वामिनी पूर्णानन्दजी द्वारा

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

(Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS/

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

MORAL STORIES ETC

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh - Feb '26

Vedanta Piyush - Jan'26

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel
Vedanta Ashram Channel

Published by:
Vedanta Ashram, Indore